मोरंगे

जुलाई–अगस्त 2016

इस बार

दीपक मीना,
उम्र–7 वर्ष,
राजकीय विद्यालय
रांवल

खिड़की

3 सफेद साँप

कविताएँ

6 बंदर / बिल्ली की भूख
7 अटकण–बटकण
8 तितली
9 चिड़िया रानी / धनिया

कहानियाँ

10 अब हम क्या करें
11 फल खट्टे नहीं हैं
12 आप ही राजा हो
13 आम
14 मुझे डर नहीं लगता
15 प्यास

याद की धूप–छाँव में

16 तुम क्यों नहीं पढ़ते

बात लै चीत लै

18 राजकुमार और राजकुमारी
19 फोरन्ती–केशन्ती
20 भाषा की सहेलियाँ ...
21 हीहीही–ठीठीठी
22 कुछ हमने बढ़ायी

सम्पादन : विष्णु गोपाल मीणा
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : जीवनेद्र सिंह
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव, **ग्रामीण शिक्षा केन्द्र**
आवरण पर चित्र :
गोमती,
उम्र–11 वर्ष, समूह–उजाला

जुलाई–अगस्त 2016, वर्ष 8, अंक 73–74

मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया एवं 'हैसली फैमिली फाउण्डेशन' के सहयोग से हो रहा है।

पत्रिका का पता

मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
हॉटल सिटी हार्ट के सामने,
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
राजस्थान 322001

फोन : 07462–220957
फैक्स : 07462–220460

सफेद साँप

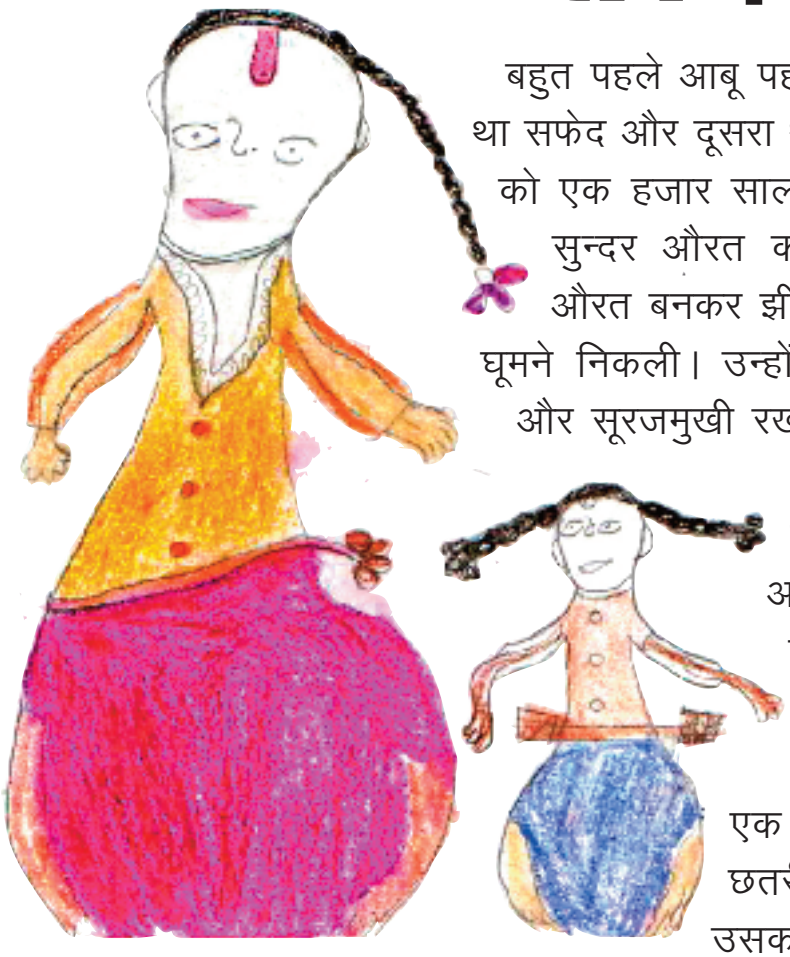

मंजु मीना, 10 वर्ष, समूह–उजाला

बहुत पहले आबू पहाड़ पर दो साँप थे। एक था सफेद और दूसरा था हरा साँप। दोनों साँपों को एक हजार साल की तपस्या के बाद दो सुन्दर औरत का रूप मिला। वे दोनों औरत बनकर झील के पास वाले शहर में घूमने निकली। उन्होंने अपना नाम चन्द्रमुखी और सूरजमुखी रखा।

जब दोनों झील के किनारे घूम रही थी तो अचानक बारिश होने लगी। दोनों एक पेड़ के नीचे बारिश से बचने के लिए रूक गई। उसी समय एक नौजवान युवक हाथ में छतरी लिए वहाँ पहुँचा। उसका नाम सरताज था। वह अपने माता–पिता की कब्र पर फूल चढ़ाने के बाद वहाँ से गुजर रहा था। पेड़ के नीचे दो औरतों को भीगते देखने के बाद उसने अपनी छतरी उन्हें दे दी और एक नौका बुलाकर उन्हें घर तक छोड़ आया। चन्द्रमुखी को यह नौजवान बहुत अच्छा लगा। उसने दूसरे दिन उसे घर आकर छतरी ले जाने को कहा।

दूसरे दिन सरताज चन्द्रमुखी के घर पहुँचा। तब जाकर चन्द्रमुखी को मालूम हुआ कि सरताज के माता–पिता बचपन में ही गुजर गए थे। वह अपनी बहिन के घर रहता है और एक दवाई की दुकान में काम करता है। चन्द्रमुखी ने सरताज से शादी करने की मांग की। सरताज ने खुशी–खुशी चन्द्रमुखी की मांग को मान लिया। शादी के बाद दोनों ने मिलकर अपनी दवाई की दुकान खोली। चन्द्रमुखी चिकित्सा में माहिर थी, इसलिए रोजाना बहुत से लोगों के इलाज में व्यस्त रहती थी। लोग उसे बहुत पसन्द करते थे।

शहर के एक मंदिर में काल नाम का साधु रहता था। उसे मालूम था कि चन्द्रमुखी एक नागिन है। उसने सरताज को बताया कि चन्द्रमुखी एक इच्छाधारी

नागिन है।

सरताज को साधु की बात पर विश्वास नहीं हुआ। साधु काल ने सरताज को नागपंचमी के दिन अपनी पत्नी को भांग पिलाने को कहा। यदि चन्द्रमुखी भांग पी लेगी तो वह नागिन के रूप में आ जायेगी।

नामपंचमी के दिन सरताज ने अपनी पत्नी को बड़े प्यार से भांग पीने को कहा। वह पति को मना नहीं करना चाहती थी। इसलिए उसने एक गिलास भांग पी ली। जल्द ही उसका पूरा बदन जलने लगा और वह नशे में झूमने लगी।

नीरू गुर्जर, 9 वर्ष, समूह–सागर

सरताज ने उसे पलंग पर लिटा दिया और चादर उड़ा कर भांग का नशा उतारने की दवा लेने चला गया। जब वह दवा लेकर पलंग के पास वापस पहुँचा और चादर हटाई तो देखा, वहाँ एक सफेद साँप लेटा हुआ था। सरताज उसे देखकर इतना डरा कि उसकी जान चली गई।

चन्द्रमुखी को जब होश आया तो उसने देखा उसका पति मरा पड़ा है। वह एक दम बौखला गई। उसने अपनी सहेली सूरजमुखी को सरताज का खयाल रखने को कहा और खुद अकेले आबू पर्वत पर संजीवनी बूटी लेने चली गई।

इस समय चन्द्रमुखी के पेट में सात महीने का बच्चा भी था। पहाड़ पर संजीवनी बूटी की रखवाली करने वाले गिद्ध से भीषण लड़ाई हुई पर वह जीत नहीं सकी। उसकी अपने पति के लिए जान की बाजी लगाने की भावना देखकर गिद्ध ने उसे संजीवनी बूटी दे दी। इस तरह सरताज की जान वापस आ जाती है। दोनों पति–पत्नी का प्यार और गहरा हो गया।

परन्तु काल साधु कहाँ अपनी हार मानने वाला था। वह फिर सरताज को एक मंदिर में बहका कर ले आया और मंदिर में लाकर उसे कैद कर दिया। चन्द्रमुखी साधु से अपने पति को वापस लेने आयी। वहाँ पर काल की और चन्द्रमुखी की जबरदस्त लड़ाई होती है। इस भयानक लड़ाई में चन्द्रमुखी के पेट पर चोट लगती है और उसके पेट में तेज दर्द होने लगा।

चन्दमुखी फिर उस झील किनारे के पेड़ के नीचे पहुँची जहाँ उसने पहली बार सरताज को देखा था। उसे दुःख हो रहा था कि सरताज को काल साधु के बहकावे में नहीं आना चाहिए था। उधर सरताज साधु के एक चेले की मदद से मंदिर से भाग जाता है। भागते–भागते वह भी झील के किनारे पहुँच जाता है। वहाँ उसने अपनी पत्नी चन्द्रमुखी को पाया। चन्द्रमुखी ने अपनी सारी असलियत सरताज को बता दी। सारी बात जानकर सरताज अपनी पत्नी को और ज्यादा पसंद करने लगा। उसने चन्द्रमुखी को वचन दिया कि चाहे वह नागिन हो या औरत, वह उसके साथ उम्र भर प्यार से रहेगा और सारा जीवन उसी के साथ बिताएगा।

कमल कुमार सैनी, शिक्षक

जल्द चन्द्रमुखी ने एक बेटे को जन्म दिया। बच्चे को जन्म लिए अभी 30 दिन ही हुए थे कि क्रूर साधु चन्द्रमुखी का काल बनकर वहाँ आ टपका। सरताज ने साधु के सामने हाथ जोड़े, पांव पकडे, गिड़गिड़ाया और चन्द्रमुखी की जान की भीख मांगता रहा। साधु नहीं माना। चन्द्रमुखी ने डटकर साधु का मुकाबला किया। साधु ने उसे घायल कर झील के किनारे वाली मीनार में दबा दिया। चन्द्रमुखी की सहेली सूरजमुखी साधु से बचने के लिए आबू पर्वत पर भाग आई। वहाँ पर उसने कड़ी तपस्या की। तपस्या से मिली ताकल से उसने साधु को पराजित कर दिया। फिर मीनार के नीचे दबी अपनी सहेली चन्द्रमुखी को निकाल कर उसकी जान बचा ली।'

स्रोत : विष्णु

बंदर

आम तोड़कर खाता बंदर।
पेड़ों में छिप जाता बंदर।
कभी उछलता कभी कूदता।
गाँवों में आ जाता बंदर।
कभी हँसाता कभी रूलाता।
बच्चों को ले जाता बंदर।
लम्बी कूद लगाता बंदर।
कभी खिलाता कभी पढ़ाता।
हमको खूब सीखाता बंदर।
हमको पास बुलाता बंदर।

मनीषा, समूह–खुशबू,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

बिल्ली की भूख

एक था सोनू एक था मोनू।
दोनों भाई गन्ने खाते।
खाते–खाते चूहा आया।
चूहे को भर पेट खिलाया।
चूहे को बिल्ली ने खाया।
बिल्ली का पेट भर न पाया।
इधर को ढूंढा उधर को ढूंढा।
लेकिन चूहा नहीं मिल पाया।
परेशान होकर बिल्ली सोई।
इधर उधर से चूहे आये।
बिल्ली की तो आँखे खुली थी।
पकड़ लियें चूहे दो चार।
बिल्ली का भर गया पेट।
खुशी–खुशी फिर बिल्ली सोई।

धर्मसिंह गुर्जर,
समूह–लहर, कक्षा–4

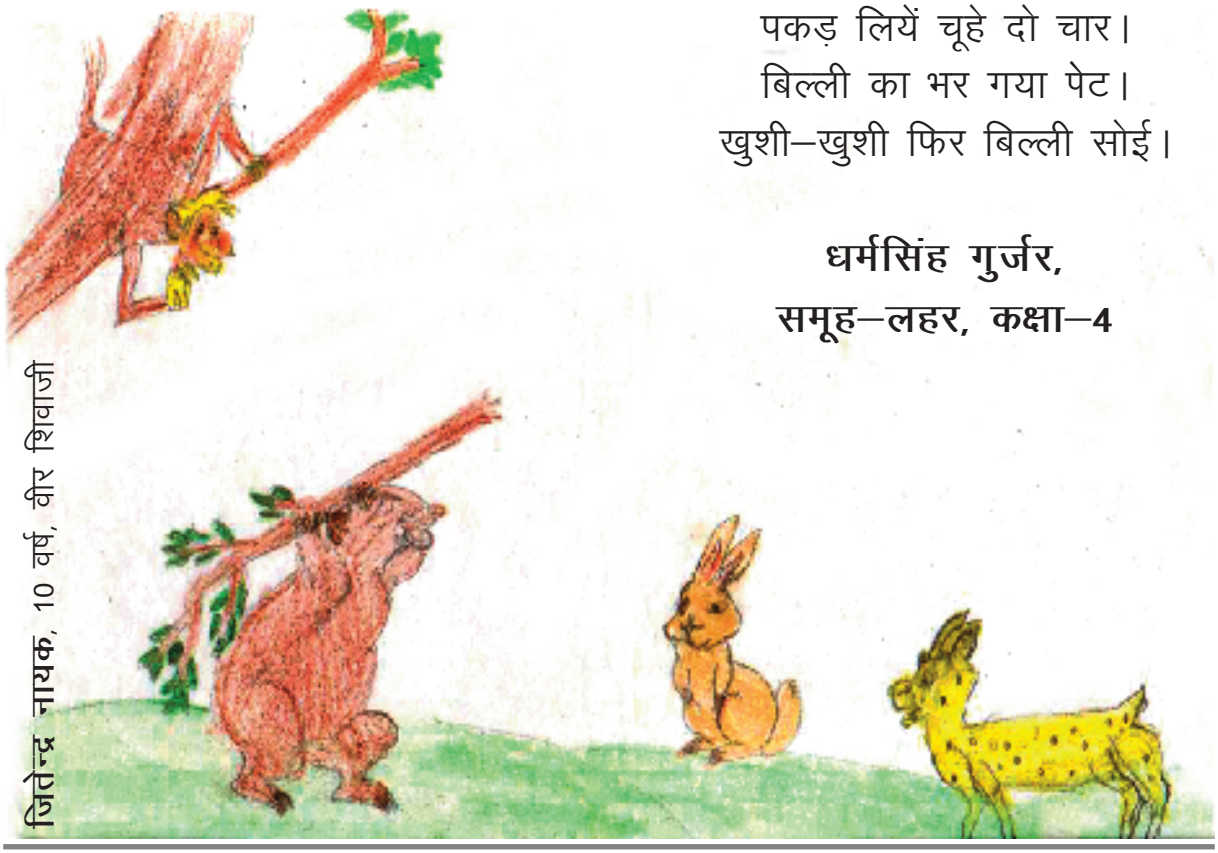

जितेन्द्र नायक, 10 वर्ष, वीर शिवाजी

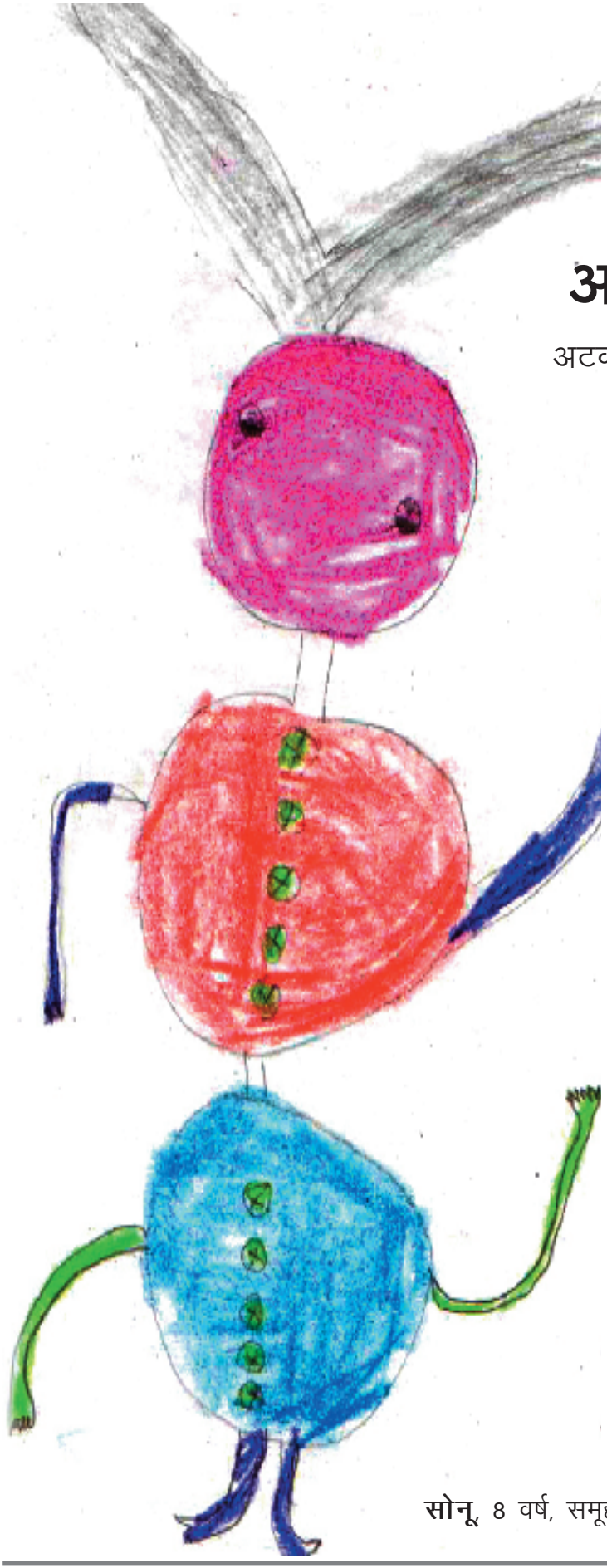

अटकण–बटकण

अटकण–बटकण दही चटोकण।
मामो लायो सात कटोरी।
एक कटोरी फूट गई।
मामा की बहु रूस गई।
काई पे रूसी?।
दही बड़ा पे रूसी।
दही बड़े में स्वाद नहीं।
मामी को कुछ याद नहीं।

जितेन्द्र नायक,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–वीर शिवाजी

सोनू, 8 वर्ष, समूह–संगम

तितली

सुंदर रंगों वाली तितली।
हमको दौड़ कराती तितली।
इधर–उधर उड़ जाती तितली।
कभी हंसाती–कभी रूलाती।
सुंदर रंगों वाली तितली।

सीमा मीना,
समूह–खुशबू,
उम्र–10 वर्ष

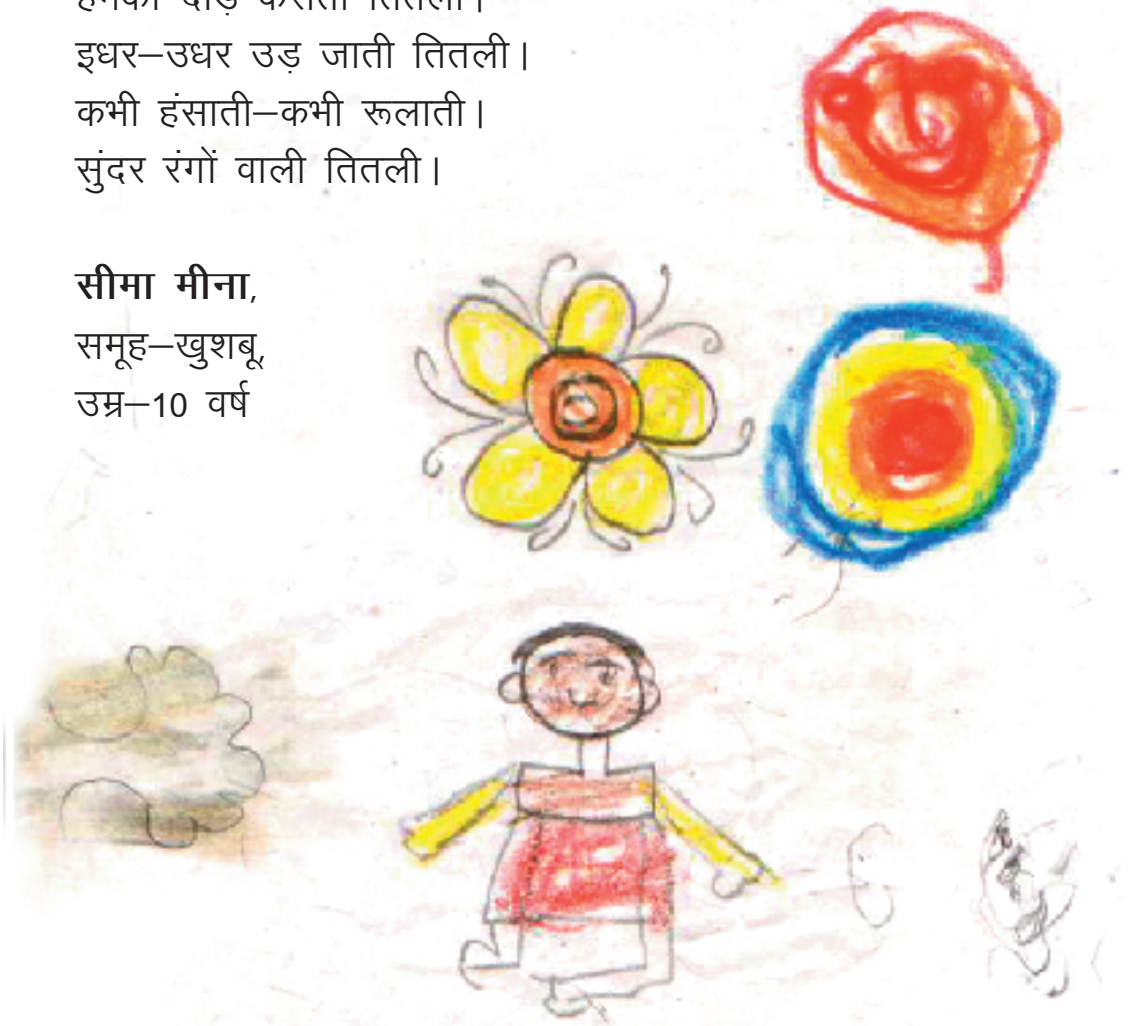

भजन बैरवा, 6 वर्ष, समूह–लक्ष्मीबाई

चिड़िया रानी

चिड़िया रानी चिड़िया रानी,
कहाँ–कहाँ से आई हो।
अपने पंखो को फैला कर,
बादल तक जा आई हो।
बादल से हुई बातों का तुम
कुछ तो हाल सुनाओ ना।
कब भरेंगे ताल–तलैया,
कब मेंढ़क टर्राएगें।
हरी–भरी जब होगी धरती,
चेहरे सबके खिल जाएंगे।
महक उठेगी सारी दुनिया,
जब जंगल गीत सुनाएगा।

शिक्षक–**विष्णु** और **नवरत्न कुमार**,
समूह–खुशबू, उम्र– 9 वर्ष

धनिया

पेड़ के नीचे मैंने धनिया बोया।
धनिये की मैंने चटनी बनाई।
चटनी मैंने गाय को खिलाई।
गाय ने मुझे दूध दिया।
दूध की मैंने खीर बनाई।
खीर मैंने भैया को खिलाई।
भैया ने मुझे पैसे दिये।
पैसे की मैं गाड़ी लाई।
गाड़ी मैंने आंगन में चलाई।
आंगन में मुझे डिबिया पाई।
फिर एक चूड़ी चटकी पाई
और सीमा मौसी लटकी पाई।

सपना, उम्र–14 वर्ष, कक्षा–8,
राज.बा.उ.प्रा.विद्या. भूरी पहाड़ी

नील, 10 वर्ष,
समूह–बरगद

कहानियाँ

अब हम क्या करें

एक बार एक राजा था। वह जंगल में घूमने गया तो उसे एक आदमी मिला। उस आदमी ने राजा से कहा कि, ''जंगल में अकेला नहीं आना चाहिए।'' वह आदमी अलग रास्ते पर निकल गया और राजा अलग रास्ते पर निकल गया। रास्ते में राजा को एक तालाब दिखा उसमें एक कछुआ था राजा कछुए को अपने साथ ले गया। राजा को चलते–चलते रात हो गई तो वह एक पेड़ के नीचे सो गया। कछुए को नींद नहीं आ रही थी। रात में एक साँप पेड़ के ऊपर से आया और राजा को डसने लगा। फिर कछुए ने जल्दी से साँप को हटाया और उसके टुकड़े–टुकड़े कर मार दिया फिर कछुआ भी वहाँ से भाग गया। सुबह उठकर राजा ने देखा तो वहाँ मरा हुआ साँप था पर कछुआ नहीं था। राजा आगे गया तो एक हाथी गन्ने खा रहा था। राजा हाथी को अपने साथ ले गया। आगे राजा को कुछ चोरों ने घेर लिया

अंकित, उम्र–11 वर्ष, खेजड़ी

उनके पास हथियार और चुराकर लाये गये हीरे–मोती थे। चोरों ने राजा से कहा कि, ''तुम्हारे पास जो भी कीमती सामान है वो हमें दे दो नहीं तो, हम तुम्हें मार डालेंगे।'' राजा ने कहा, ''मेरे पास कुछ भी नहीं है।'' चोरों ने कहा कि, ''हम ये हाथी ही ले जाते हैं।'' फिर राजा को गुस्सा आ गया तो उसने अपनी तलवार निकाली और एक चोर को पकड़ कर उसकी गर्दन पर टिका दी और समझाया कि चोरी करना या किसी को लूटना बुरी बातें हैं। इन सबका व्यक्ति को बुरा फल मिलता है। हमें कभी बुरे काम नहीं करने चाहिए। यह बात चोरों के समझ आ गई। उन्होंने राजा से माफी मांगी और चुराए गये हीरे–मोती जिनके थे उनको वापस देने के लिए चले गये। सभी चोर हीरे–मोती वापस लौटाकर राजा के पास आ गये और कहा, ''राजा अब हम क्या काम करें?'' राजा उन्हें अपने महल में ले गया और सैनिक बना दिया।

जितेन्द्र बैरवा, उम्र–12 वर्ष, समूह–गांधी

फल खट्टे नहीं हैं

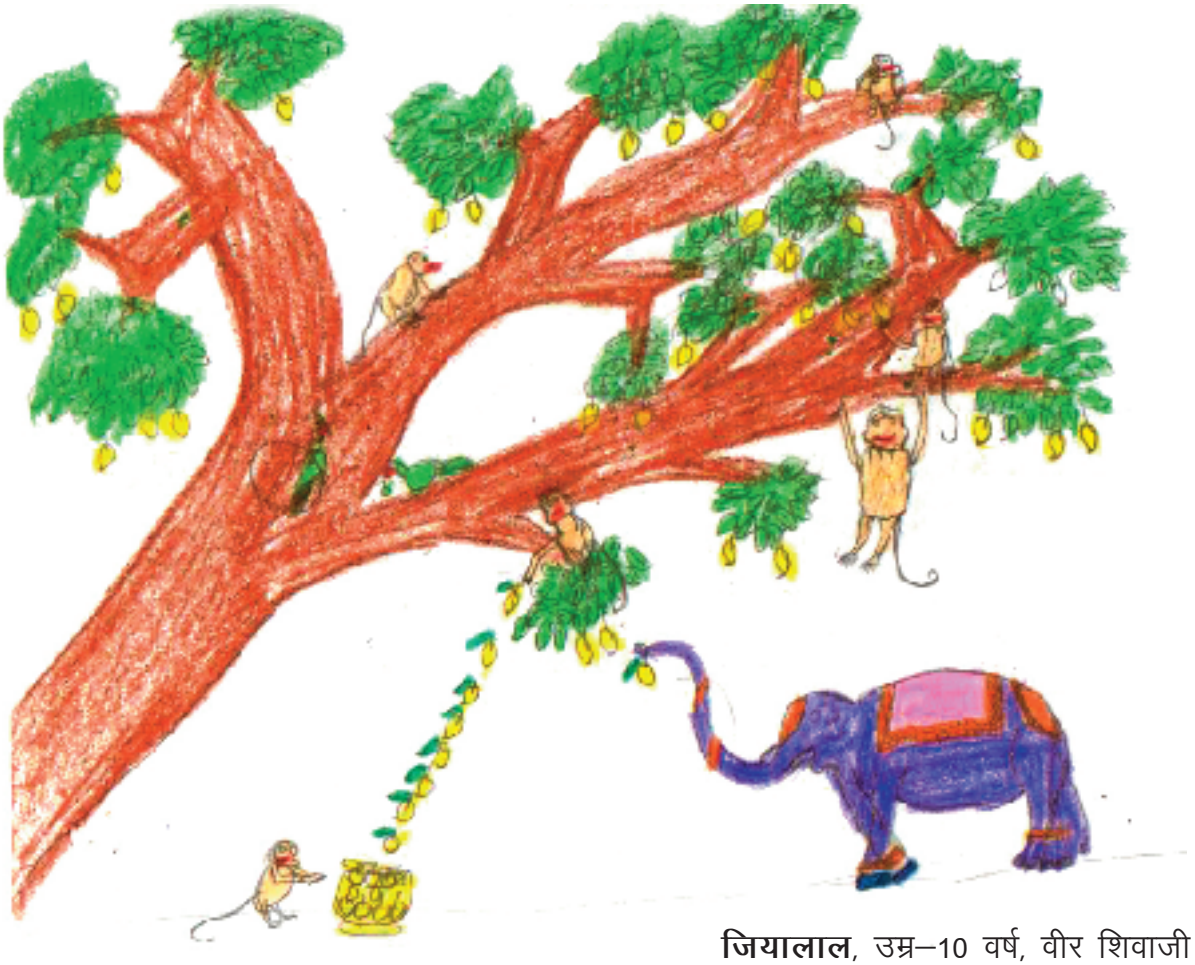

जियालाल, उम्र–10 वर्ष, वीर शिवाजी

एक हाथी जंगल में रहता था। एक बार उसे एक खरगोश बगीचे में गाजर–मूली खाते हुए दिखाई दिया। हाथी को भूख लगने लगी। वह अपना पेट खुजलाने लगा। इतने में ही एक लोमड़ी आ धमकी। लोमडी बोली, ''आज हाथी तो बहुत ही उदास दिख रहा है, अरे हाथी किस विचार में पड़े हो?'' हाथी बोला, ''मुझे बहुत जोर से भूख लग रही है।'' लोमड़ी बोली, ''मैं तुम्हें फल खिलाती हूँ।'' वे दोनों फल खाने चले गये तो लोमड़ी बोली, ''तुम बैठो मैं इस पेड़ से फल तोड़ती हूँ।'' लोमड़ी पेड़ से फल तोड़ने लगी तो फल उसके हाथ नहीं आये। वह हाथी से बोली की ये फल तो खट्टे हैं। हाथी हँसने लगा तो लोमड़ी बोली, ''हाथी तुम हंस क्यों रहे हो?'' हाथी बोला, ''ये फल खट्टे नहीं हैं, मैं इन्हें तोड़ देता हूँ।'' हाथी ने अपनी सूंड उठाई और पेड़ को हिलाया तो उस पेड़ से फल गिरने लगे। फिर दोनों ने बहुत सारे फल खा लिए और वे पक्के दोस्त बन गये।

नीरू गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

आप ही राजा हो

रणवीर गुर्जर,
समूह–सागर, उम्र–6 वर्ष

एक बार एक बंदर पेड की डाल पर लटक रहा था। वह अचानक पेड़ से नीचे गिर गया। जिसके कारण उसका दिमागी संतुलन खराब हो गया। बंदर को रास्ते में एक आदमी मिला तो बंदर ने आदमी को थप्पड़ मार दिया। धीरे–धीरे बंदर जंगल के सभी जानवरों को मारने लगा और कहने लगा कि इस जंगल का राजा मैं हूँ। एक बार बंदर को शेर मिल गया। बंदर ने शेर से झगड़ा शुरू कर दिया। उन दोनों के बीच लड़ाई का मुकाबला हुआ जो 5 दिन तक चला। शेर, बंदर के सामने कमजोर पड़ गया और वापस चला गया। शेर ने सोचा कि मैं अब ज्यादा माँस खाऊँगा जिससे मेरी शक्ति दुगनी हो जायेगी, फिर मैं बंदर को हराने के लिए तैयार हो जाऊँगा। कुछ दिन बाद फिर से शेर और बंदर का मुकाबला हुआ। शेर ने बंदर के एक जोरदार पंजा मारा। बंदर एक पंजे में ही बेहोश हो गया। होश में आने के बाद बंदर का दिमागी संतुलन ठीक हो गया। बंदर ने शेर से कहा कि, ''शेर राजा मैं हार गया, आप ही जंगल के राजा हो।'' फिर सभी जानवरों ने शेर को राजा बना दिया। शेर बहुत खुश हो गया।

शिवराज, समूह–सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

आम

काजू, उम्र–8 वर्ष, समूह–लक्ष्मीबाई

एक बार एक नदी थी। उस नदी के किनारे दूर–दूर तक कोई पेड़ नहीं थे। एक दिन एक तोता उस नदी के किनारे आया तो उसने देखा कि इस नदी के किनारे दूर–दूर तक कोई पेड़ नहीं है, यहाँ रूकने–बैठने की जगह भी नहीं है। वह तोता उड़कर शहर के बाजार में गया और वहाँ से आम लेकर आया। उसने आम तो खा लिया और उसकी गुठली को उस नदी के किनारे एक छोटे गड्डे में डाल दिया। फिर उसमें थोड़ी सी खाद लाकर डाल दी। तोता वहाँ से चला गया तथा कुछ दिनों बाद आकर देखा तो गुठली में से आम का पौधा निकल आया था। वह फिर वहाँ से चला गया तथा एक साल बाद वापस आकर देखा तो वह आम का पौधा बड़ा पेड़ बन गया था और उसमें आम आ रहे थे। वह तोता उस आम के पेड़ पर रहने लगा तथा आम खाकर गुठलियों को जगह–जगह डालता रहा। धीरे–धीरे कुछ ही वर्षों में वहाँ बहुत सारे आम के पेड़–पौधे हो गये और उस नदी के किनारे एक जंगल सा बन गया।

करण नायक, उम्र–10 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

सविता मीना, उम्र–11 वर्ष, रिमझिम

मुझे डर नहीं लगता

एक बार एक भालू थी। वह अपने बच्चे के साथ तालाब में पानी पीने गयी। रास्ते में बरसात आने का मौसम हो गया तो वह वापस अपने घर की ओर भागने लगी। बच्चे ने पूछा, ''माँ आप क्यों भाग रही तो वह बोली, ''बरसात आने वाली है। हम भीग जायेंगे, चलो जल्दी–जल्दी घर चलें।'' तब जाकर बच्चे के बात समझ में आई। वे अपने घर आ गये। घर आकर भालू के बच्चे ने कहा, ''माँ मैं बाहर जाता हूँ।'' बाहर आकर बच्चा बरसात को पुकाने लगा। कुछ ही देर में बादल घड़–घड़ करने लगे और बरसात आने लगी। बरसात बहुत तेज हो गई पर भालू का बच्चा वहीं खड़ा रहा। फिर बरसात ने कहा, ''बच्चे तुम मेरे से नहीं डरते हो क्या?'' भालू के बच्चे ने कहा, ''मैं आपसे नहीं डरता हूँ, मुझे बरसात बहुत अच्छी लगती है।'' यह सुनकर बरसात खुश हो गई। कुछ देर बाद बरसात थम गई। बरसात थमने के बाद भालू का बच्चा वापस अपने घर के अन्दर चला गया।

रामधणी, समूह–सागर, उम्र–8 वर्ष

प्यास

राजेश बैरवा, उम्र–13 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

एक बार जंगल के राजा शेर को प्यास लगी। वह अपनी गुफा से बाहर आया और पानी तलाशने लगा। शेर को कहीं भी पीने के लिए पानी नहीं मिल रहा था। प्यास इतनी तेज थी की उसका शरीर कमजोर होने लगा। पर उसे कहीं भी पानी नहीं मिला। चलते–चलते वह हाथी के पास गया और हाथी से पानी मांगा। गर्मी के दिन थे हाथी बोला, ''इतनी गर्मी में पानी कहाँ से लाकर दूं, मै खुद ही प्यासा हूँ।'' शेर बिल्ली के पास गया। बिल्ली बोली, ''क्या बात है? तुम उदास क्यों हो?'' शेर ने बिल्ली को सारी बात बताई। बिल्ली बोली, ''मेरे पास तो पानी नहीं है, तुम किसी और के पास जाकर पानी मांग लो।'' शेर फिर तेंदुए, गाय एवं भालू आदि जानवरों के पास गया। परन्तु सभी जानवरों ने मना कर दिया। नदी भी सूखी पड़ी थी। आखिर में शेर बंदर के पास गया। उसने बंदर को सारी बात बताई। बंदर बोला, भाई पानी तो मेरे पास भी नहीं है। पर प्यास बुझाने के लिए मैं तुमको नारियल पानी पिला सकता हूँ।'' शेर ने कहा, ''भाई जान निकली जा रही है। तुम कुछ भी पिला दो।'' बंदर शेर के लिए नारियल के पेड़ से नारियल तोड़ता फिर उसे फोड़कर शेर को देता है। इस तरह नारियल में भरे पानी को शेर पी लेता है और उसकी प्यास बुझ जाती है। शेर बंदर से कहता है, ''तुमने मेरी जान बचाई है। बताओ तुम्हें क्या चाहिए?'' बंदर कहता है ''मेरा परिवार बहुत भूखा है। मुझे खाने का सामान दे दो।'' शेर उस बंदर को एक गठरी देता है और कहता है, ''ये गठरी ले लो इसमें खाने का सामान है। मैं तो ऐसी चीजें खाता नहीं हूँ, पर तुम्हारा काम हो जायेगा।'' बंदर गठरी ले लेता है और अपने परिवार के पास चला जाता है। उसका परिवार भोजन की गठरी को देखकर खुश हो जाता हैं।

सोनू, समूह–बरगद, उम्र–9 वर्ष

तुम क्यों नहीं पढ़ते

बात उस समय की है जब मैं काफी छोटा था। घर वाले मुझे पढ़ने भेजते थे लेकिन मेरा पढ़ाई में मन बिल्कुल नहीं लगता था। मेरा मन केवल जानवरों के साथ जंगल में जाने में लगता था। वहाँ पर खेलना, कूदना, हरे भरे पेड़–पौधे देखना, झरनों और पक्षियों की ध्वनि सुनकर मेरा मन आनन्दित हो उठता। मैं चाहता कि हमेशा इन ग्वालों के साथ ही खेलता–कूदता रहूँ। घर वाले मुझे स्कूल भेजने के

सफेदी गुर्जर,
उम्र–7 वर्ष, समूह–सागर

लिए परेशान होने लगे। मैं स्कूल से गायब हो जाता और शाम को घर आता। पिताजी कहते कि, ''कहाँ पर था?'' मैं जवाब देता, ''स्कूल में।'' पिता जी कहते कि, ''तेरे गुरूजी ने कहकर भेजा है कि तुम स्कूल नहीं जाते हो।'' मैंने पिताजी से कहा कि, ''मेरे लिए कुछ बकरिया ले आओ, मैं स्कूल नहीं जाऊंगा, मैं बकरियाँ ही चरा लूंगा।'' फिर मैं स्कूल नहीं गया तो पिताजी परेशान होकर तीन बकरियाँ ले आये। मुझे मन मांगी मुराद मिल गई। मैं खुशी से नाचने लगा।

मैं बकरियाँ चराने जंगल में जाने लगा। एक दिन मेरा चाचा एक छोटे से हिरन के बच्चे को लेकर घर आया। बच्चा बहुत सुंदर था। हमने उस बच्चे को बकरी का दूध पिलाया। उस बकरी का बच्चा मर गया था। धीरे–धीरे उस बकरी ने उस हिरन

के बच्चे को अपना ही बच्चा समझ लिया। वह बच्चा बड़ा होने लगा और बकरियों के साथ जंगल में चरने जाने लगा। सभी उसे देखते तो दंग रह जाते। वह बच्चा सभी को चकित करने वाला लगता था। मेरे घर वाले उस बच्चे से बहुत प्यार करते थे। उस बच्चे का नाम सुंदरी था। सुंदरी पुकारने पर वह दौड़कर आता था। एक दिन क्या हुआ कि मैं बकरियाँ लेकर जंगल में चला गया। सुंदरी को घर पर ही रख लिया। क्योंकि उस दिन हमारे घर मेहमान आये हुए थे। मनोरंजन करने के लिए सुंदरी घर पर ही रही। मेहमानों की वजह से घर वालों ने सोचा कि सुंदरी को खुल्ला छोड़ देते हैं। सुंदरी पास के खेत में चरने चली गई। वहाँ कुछ कुत्ते छिपे हुए थे। सुंदरी चने खाने में व्यस्त थी। अचानक एक कुतिया ने सुंदरी का गला पकड़ लिया और सारे कुत्ते उसके चिपट गये। वहाँ कोई नहीं था। थोड़ी ही देर में सुंदरी के प्राण पखेरू उड़ गये। कुछ समय बाद घर वालों ने सुंदरी को ढूंढा लेकिन वह नहीं मिली। बहुत ढूंढने के बाद वह चने के खेत में मृत मिली। पिताजी ने देखा कि इस कुतिया के मुँह पर पर खून लगा हुआ है। पिताजी को इतना गुस्सा आया कि उस कुतिया को पकड़कर एक सूखे कुए मैं फेंक दिया। बाद में उन्होंने सोचा कि सुंदरी तो मर गई है वह वापस तो नहीं आ सकती। उन्हें कुतिया पर दया आई और कुतिया को कुए से बाहर निकाल दिया। उस दिन हमारे घर पर चूल्हा नहीं जला। मैं भी बहुत रोया। धीरे–धीरे मेरा मन भी बकरियाँ चराने से ऊबने लगा।

मेरा बड़ा भाई उस समय जोबनेर में पढ़ रहा था। उसके दोस्त एक बार हमारे गाँव में आये तो उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम क्यों नहीं पढ़ते हो। उन्होंने मेरे भाईसाहब से कहा, ''आप तो पढ़ रहे हो और छोटे भाई को नहीं पढ़ा रहे हो।'' तब भाईसाहब ने पूरी बकरियाँ बेच दी और मुझे स्कूल भेजने लगे। जब मुझे पहली कक्षा में बिठाया गया तो मुझे बहुत शर्म आई लेकिन मैंने ठान ली कि मैं पहली में नहीं पढूंगा। फिर मैं सीधे ही तीसरी में बैठा। तीसरी के बाद मैंने सीधे पाँचवी की परीक्षा दी। पाँचवी की परीक्षा देकर मैंने छठी कक्षा में दाखिला ले लिया। अब मैं अपनी उम्र के बच्चों के साथ बैठने लगा। साल दर साल मैं पढ़ता गया और पास होता गया। मैने बी.ए. पास की और तीन बार एम.ए. किया। अन्त में मैने एल.एल.बी. भी किया। अब मैं रणथम्भौर जंगल के आस–पास बसे गाँवों में रहने वाले बच्चों को शिक्षा से जोड़ने का काम करता हूँ ताकि वे भी मेरी तरह पढ़ाई कर सकें। बच्चों का पढ़ाई में मन लगे। इसके लिए नए–नए तरीके सोचता हूँ और उनको सब के साथ साझा करता हूँ।

मानसिंह सिर्रा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

राजकुमार और राजकुमारी

एक बार की बात है। एक राजा था। वह एक बड़े गाँव में रहता था। वह प्रजा का बहुत खयाल रखता था। प्रजा भी राजा पर पूरा विश्वास करती थी। उसके तीन रानियाँ थी। बड़ी रानी के एक लड़का था। वे तीनों रानियाँ मिल–जुलकर रहती थी। राजा भी तीनों को खुशी से साथ–साथ रहते हुए देखकर खुश रहता था। धीरे–धीरे राजा का लड़का बड़ा हो गया। एक बार राजा की प्रजा पर संकट आ गया। दूसरे राजा की सेना ने आक्रमण कर दिया। लड़के ने भी उस राजा से युद्ध किया। लड़के की सेना ने मिलकर दूसरे राजा को हरा दिया। लड़का जब युद्ध में जीतकर वापस आया तो प्रजा ने उसका जोरदार स्वागत किया। राजा ने घोषणा की कि अब इसे ही राजा बनायेंगे। तीनों रानियाँ भी बहुत खुश हुई। उस लड़के का नाम चन्द्रगुप्त मौर्य था।

ज्योति मीना,
उम्र–10 वर्ष, उजाला

लड़का एक दिन जंगल में शिकार करने गया तो उसे एक हिरन दिखाई दिया। वह हिरन भागता–भागता राजकुमारी के पास चला गया। चन्द्रगुप्त भी उसके पीछे–पीछे चला गया। चन्द्रगुप्त राजकुमारी को देखकर चकित हो गया। वह राजकुमारी बहुत सुंदर थी। राजकुमारी बोली कि, ''आप इस हिरन को क्यों मार रहे हो? इस हिरन ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? अगर तुम इस हिरन को मार दोगे तो इसका परिवार खत्म हो जायेगा, इसके बच्चे भूख से मर जायेंगे। इसे मारकर तुम्हें कुछ भी नहीं मिलेगा।'' चन्द्रगुप्त को यह बात अच्छी लगी। उसने कहा, ''आप ठीक कह रही हो, मुझे इसे मारकर कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। वह वापस घर आ गया और अपने माता–पिता को सारी बात सुना दी। राजा को भी यह बात अच्छी लगी। अगले दिन राजा ने अपनी प्रजा से कहा कि, ''कोई भी व्यक्ति अब जानवरो को नहीं मारे। जानवरों को मारने से आपको कुछ भी नहीं मिलेगा। जानवर का तो सारा परिवार ही मिट जायेगा।'' प्रजा को भी यह बात अच्छी लगी। उन्होंने जानवरों को मारना छोड़ दिया। चन्द्रगुप्त ने राजा से कहा कि पिताजी मैं उस राजकुमारी से शादी करना चाहता हूँ। राजा ने राजकुमारी से चन्द्रगुप्त की शादी करवा दी और चन्द्रगुप्त को राजा बना दिया।

मीरा मीना, समूह–सावन, उम्र–11 वर्ष

फोरंती केशन्ती

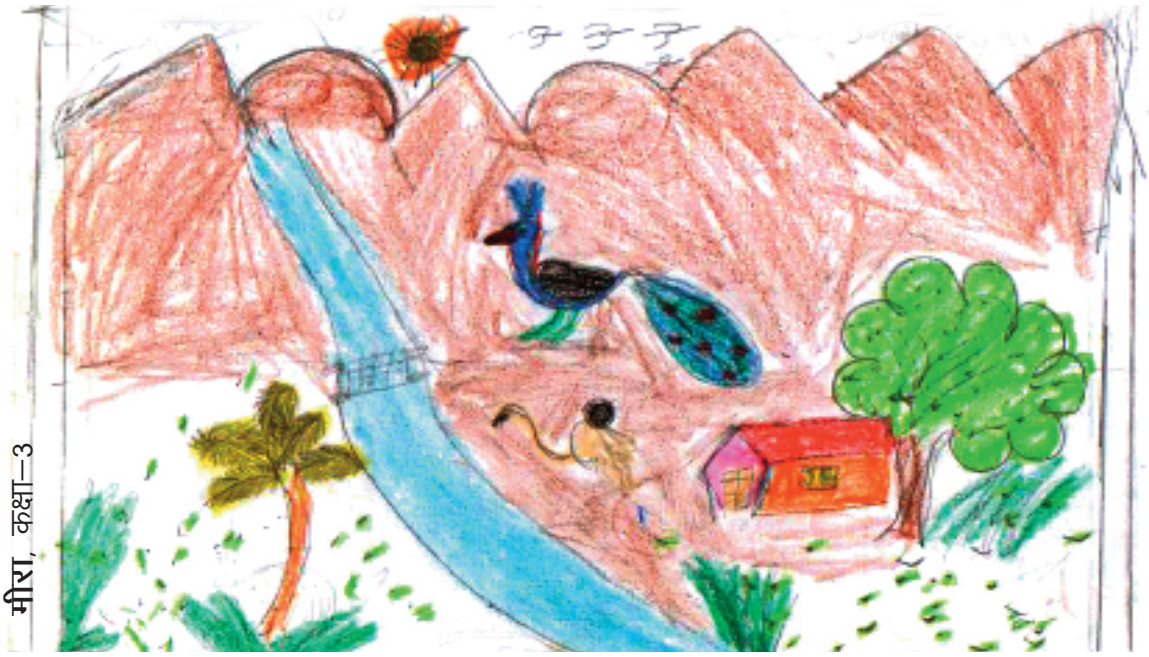

मीरा, कक्षा–3

जंगल के पास एक गाँव था। जिसमें एक किसान रहता था। उसके पास बहुत सारी भैंसें थी। उसने अपनी भैंसों के नाम गाँव के लोगों के नाम पर रखे हुए थे। उसने नाम भी उन औरतों के नाम पर रखे जिनसे उसकी लड़ाई हो रखी थी।

अब रोजाना किसान अपनी भैंसों को लेकर जंगल में जाता। जाते वक्त वह उन औरतों के घर के आगे से चिल्लाता हुआ निकलता और कहता, ''फोरन्ती, केशन्ती, लौटन्ती कहाँ मर गई तीनों की तीनों।'' इस तरह किसान रोज कहते हुए जंगल की तरफ निकल जाता। उधर वे औरतें गुस्सा करते हुए मन ही मन चिल्लाती रहती। एक दिन की बात है किसान की एक भैंस को शेर उठा कर ले गया। वह रोता–रोता वापस गाँव में आया और बोला, ''लौटन्ती को शेर ले गया, फोरन्ती और कैशन्ती को बचाओ।'' गाँव वालों ने जैसे ही सुना आव देखा ना ताव सारे के सारे लाठी डण्डा लेकर जंगल की तरफ भागे और सबसे आगे फोरन्ती, केशन्ती के पति थे। वे दोनों अपनी पत्नियों को ढूंढ रहे थे और किसान अपनी भैंस को। इतनी देर में जंगल में से गाँव वाले उस किसान की भैंसों को लेकर आ गये और जोर से बोले ये रही तेरी फोरन्ती, केशन्ती। यह सुनकर वे दोनों पति एक दूसरे की तरफ देखकर हँसने लगे और बोले, ''ये है फोरन्ती, केशन्ती, हम पागल हमारी पत्नियों को ढूंढ रहे थे।''

रेणू गुर्जर, शिक्षिका, ग्रा.शि.के. राज. प्राथ. विद्या. बोदल

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

सुरेन्द्र सैनी, उम्र–10 वर्ष, समूह–रिमझिम

1 छोटा सा रामदास, कपड़े पहने सौ–पचास।
2 पत्ते हैं पर डाल नहीं, फूल है पर महक नहीं,
फल है पर बीज नहीं, छाल है पर काट नहीं।
3 हमने देखा ऐसा वीर, गाना गाकर मारे तीर।
4 हमने देखा ऐसा बंदर, जो उछले पानी के अन्दर।
5 सात सखी ने सीरो रान्ध्यों, बिन पानी बिना आग।
एक सखी खाने लगी, सिरो बडो स्वाद।

पुष्पेन्द्र, उम्र–11 वर्ष, समूह–उजाला,
जयसिंह मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

हीहीही-ठीठीठी

1 मास्टरजी– ''राजू बता रावण को किसने मारा।'
दो–तीन बार पूछने पर भी नहीं बताया तो मास्टर जी गुस्सा हो गए और जोर से बोले। तो राजू ने डरते हुए कहा,
''सर मुझे नहीं पता मैने नहीं मारा।''

2 अध्यापक – आर्ट की कॉपी में ट्रेन बनाओं। मैं 5 मिनट में आता हूँ।
10 मिनट बाद।
अध्यापक – अपनी ट्रेन दिखाओ।
बच्चा – सर आप लेट हो गए। ट्रेन तो 5 मिनट पहले ही आकर चली गई।

स्रोत – विष्णु

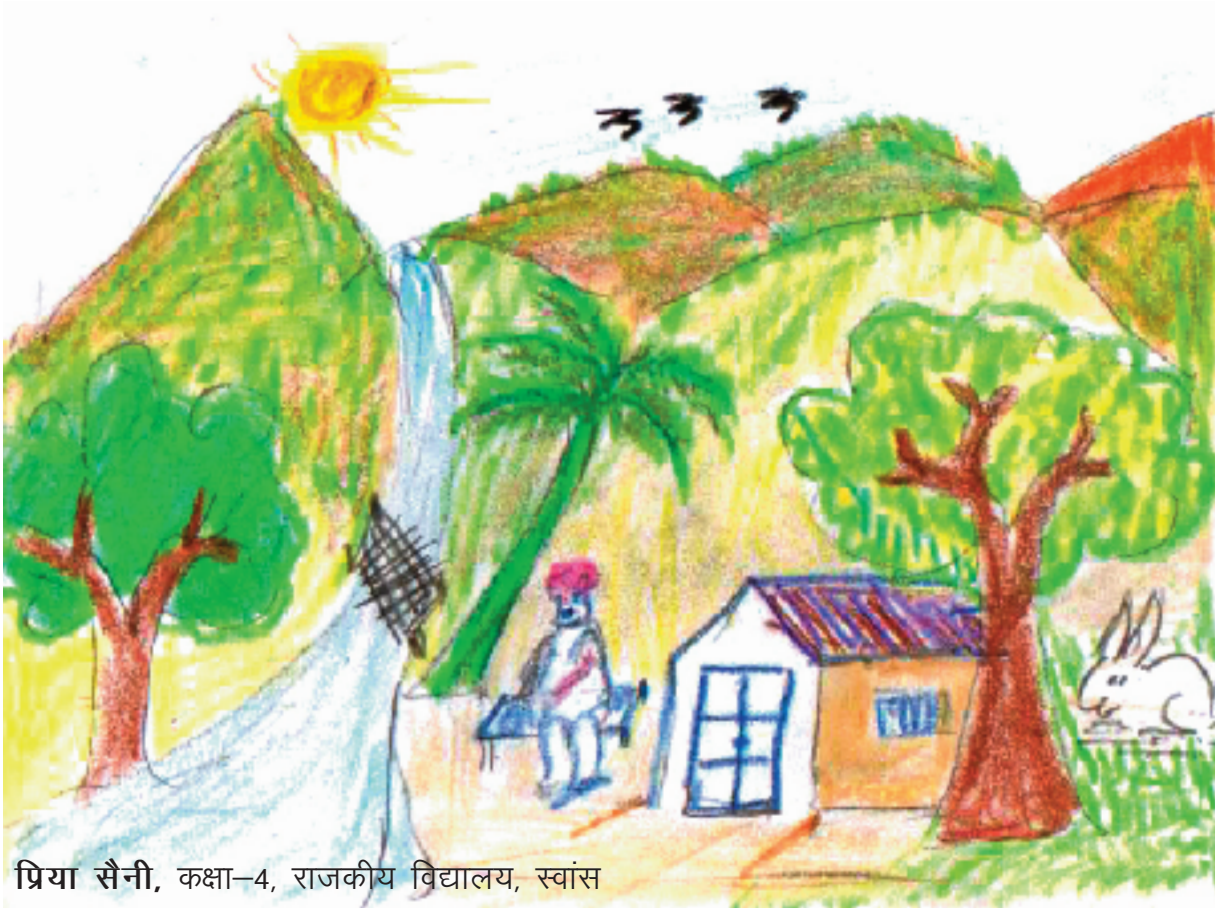

प्रिया सैनी, कक्षा–4, राजकीय विद्यालय, स्वांस

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

एक बार एक चप्पल और जूता थे। एक दिन जूते ने चप्पल से कहा कि, ''हम दोनों में से किसकी कीमत ज्यादा है? हम दोनों में से जो ज्यादा कीमती होगा वही राजा कहलायेगा...

जयसिंह मीना, *उम्र 10 वर्ष, समूह–शिवाजी, द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

चिड़िया रानी बड़ी सयानी,
बैठ डाल पर पी रही पानी...

रेणू गुर्जर, *शिक्षिका, राज. प्राथ. विद्या. बोदल द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

जिवनेन्द्र सिंह, शिक्षक

सुमन सैनी,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–उजाला

पहेलियों के ज़वाब –

1. प्याज 2. पपीता का पेड़ 3. मच्छर 4. मेंढक 5. मधुमक्खी का छत्ता

बंटी मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–संगम